जाती, बदली जाती है या आगे बढ़ाई जाती है, ऐसा वह मानता है; और इसी के लिए यत्नशील है। कहना सही होगा कि वह मर्यादावान् विद्रोही है। फिर इस बात को चाहे आप प्रशंसा से कह लीजिए चाहे व्यंग्य और विद्रूप से।

2. प्रयोगवाद से आप कया समझते हैं? उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

अज्ञेय अपने समय की प्रमुख साहित्यिक विधाओं के अत्यंत महत्त्वपूर्ण लेखक हैं- स्पष्ट कीजिए।

3. 'आज थका हिय-हारिल मेरा'- कविता का प्रतिपादय लिखिए। (15)

अथवा

अज्ञेय के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपने-अपने अजनबी' अज्ञेय का वैयक्तिक यथार्थबोध पर आधारित उपन्यास है-विचार कीज़िए। (15)

अथवा

'खितीन बाबू' कहानी के केंद्रीय पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. 'अज्ञेय: अपनी निगाह में' निबंध के कथ्य का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'रूढ़ि और मौलिकता' में निहित विचार तत्त्व का विवेचन कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9421 **K**

Unique Paper Code : 2053100020

Name of the Paper : Sachidanand Heeranand Vatsyayan Agyey

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) इस सूखी दुनिया में प्रियतम मुझ को और कहाँ रस होगा?
शुभे! तुम्हारी स्मृति के सुख से प्लावित मेरा मानस होगा।
दृढ़ डैनों के मार थपेड़े अखिल व्योम को वश में करता,
तुझे देखने की आशा से अपने प्राणों में बल भरता,
ऊषा से ही उड़ता आया, पर न मिल सकी तेरी झाँकी
साँझ समय थक चला विकल मेरे प्राणों का हारिल पाखी:
तृषित, श्रांत, तम - भ्रांत और निर्मम झंझा - झोंकों से ताड़ित-
दरस प्यास है असह, वही पर किये हुए उस को अनुप्राणित।

अथवा

यही कहा पर्वत ने, यही घन - वन ने,
यही बोला झरना, यों कहा सुमन ने।
तितलियाँ, पतंगे, मोर और हिरने,
यही बोले सारस, ताल, खेत, कुएँ, झरने।
नगर के राज - पथ, चोंबारे, अटारियाँ
चीखती - चिल्लाती हुई दौड़ती जनाकुल गाड़ियाँ।
अग - जग एकमत! मैं भी सहमत हूँ।
मौन, नत हूँ।

(ख) दिन छिपे के वक़्त केवल एक बार खाना खाता था। यों वे दो वक़्त के लिए काफी होता था। उसी समय कोठरी और गैराज के लोटे भर दिए जाते थे। लाता था एक जवान लड़का, जो स्पष्ट ही नौकर नहीं था; देविन्दरलाल ने अनुमान किया कि शेख साहब का लड़का होगा। वह बोलता बिल्कुल नहीं था। देविन्दरलाल ने पहले दिन पूछा था कि शहर का क्या हाल है तो उसने एक अजनबी दृष्टि से इन्हें देख लिया था। फ़िर पूछा कि अभी अमन हुआ है या नहीं? तो उसने नकारात्मक सिर हिला दिया था। और सब खैरियत? तो फिर सिर हिलाया था- हाँ।

अथवा

इस बिना क़फन की कब्र से क्या वह पहले की ही अवस्था अच्छी नहीं थी? बर्फ के नीचे दब कर मर जाना भी मर जाना है। लेकिन वह दबकर मरना तो है- उसमें कार्य और कारण की संगति तो है! लेकिन यह बिना दबे, बिना बर्फ को छुए भी अहेतुक मर जाना - यह मानो हमारे जीवन के अनुभव का

अपमान करता है। और हम मरने पर भी अनुभव का खण्डन सहने को तैयार नहीं। शायद यह हमारे इस करुण विश्वास का - विश्वास की कामना का फल है। कि अगर अनुभव है तो हम भी हैं, और अगर कोई अनुभव हमें हुआ है तो हमारे मर जाने पर भी वह नहीं मरता और एक धनात्मक उपलब्धि के रूप में बचा ही रह जाता है।

(ग) "होनहार बिरवान के होत चिकने पात": मैं कुछ होनहार बिरवा तो नहीं था, पर नक्शों के बगदादी कालीन पर बैठकर हवाई यात्रा करने की इस आदत से यह तो पता लग ही सकता था कि आगे चलकर भी कहीं टिक कर नहीं बैठूँगा। बात भी ऐसी है, लगातार कुछ दिन भी एक जगह रहता हूँ तो कुछ अपनी इच्छा से नहीं, लाचारी से; और उस लाचारी में बहुत से नक्शे जुटा कर फिर अपने लिए कोई हीला निकाल ही लेता हूँ। और आप सच मानिए, जीने की कला सबसे पहले एक स्थान से दूसरे पर जाने की कला है - कम-से-कम आधुनिक काल में, जब मानव जाति का इतना बड़ा अंश या तो प्रवासी है, या शरणार्थी ही: एक स्थान से दूसरे स्थान, एक पेशे से दूसरे मेंय एक घर से दूसरे घर, इत्यादि!

अथवा

पुरातत्ववेत्ता की छाया में अकेले रहने का एक लाभ अज्ञेय को और भी हुआ है। चाहे विरोधी के रूप में चाहे पालक के रूप में, वह बराबर परम्परा के सम्पर्क में रहा है। रूढि और परम्परा अलग-अलग चीजें हैं, यह उसने समझ लिया है। रूढ़ि वह तोड़ता है और तोड़ने के लिए हमेशा तैयार है। लेकिन परम्परा तोड़ी नहीं